IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय राजनीति में विपक्ष के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका का अध्ययन।

तेज सिंह

शोद्धार्थी दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र ,

केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश

सार : –

किसी भी लोकतांत्रिक देश में स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान वहां के विपक्ष की मजबूती मानी जाती है। अगर लोकतंत्र में विपक्ष कमजोर होगा तो स्वाभाविक तौर पर उस राज्य की लोकतांत्रिक संरचनाएं कमजोर होना आरंभ हो जाएंगी। आजादी के पश्चात पूरे भारत में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला विपक्ष के नाम पर कुछ एक चुनिंदा नाममात्र के राजनीतिक दल थे। उस समय कुछ एक राजनेता राजनीतिक दलों में ऐसे थे जिनका वैचारिक आधार काफी मजबूत था तथा सत्ता पक्ष में बैठने की बजाए उन्होंने विपक्ष में बैठना उचित समझा जिनमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉ राम मनोहर लोहिया, जे बी कृपलानी व बी आर अंबेडकर प्रमुख थे। इन्हीं में से पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे दूरदर्शी राजनेता थे, जो एक ऐसे राजनीतिक संगठन को चला रहे थे जो पूरी तरह से कांग्रेसी विचारधारा के विपरीत था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय समय-समय पर कांग्रेस की गलत नीतियों कि आलोचना करने वाले नेताओं में हमेशा पहली पंक्ति में रहा करते थे। जिस समय विपक्ष के नाम पर सिर्फ चुनिंदा राजनेता थे उस समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु विपक्ष में रहकर अपनी एक अहम भूमिका निभाई।

शब्द बीज : –

व्यक्तित्वमूलक, स्वयंसेवक, विचारपद्धति, लोकतांत्रिक व्यवस्था ।

भूमिका : –

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति के वह शिखर महापुरुष थे जो कभी संसद के अंदर चुनकर तो नहीं जा सके, किन्तु उन्होनें जनसंघ को एक ऐसा वैचारिक आधार दिया जिस कारण जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी तक कई कार्यकर्ता भारतीय राजनीति के शीर्ष पदों तक पहुंचे। वह पंडित दीनदयाल उपाध्याय ही थे जिनके राजनीतिक उतराधिकारी अटल विहारी वाजपाई विपक्ष के सबसे बड़े नेता से लेकर भारत के प्रधानमंत्री तक का सफर तय कर पाये। जब कांग्रेस के एकछत्र राज में हर व्यक्ति कांग्रेस के साथ चलना चाहता था। उस वक्त पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने धारा के विपरीत चलकर भारतीय राजनीति में लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने हेतु भारतीय जनसंघ को एक वैचारिक आधार प्रदान किया और विपक्ष को सशक्त बनाने पर बल दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने डॉ राम मनोहर लोहिया व जेबी कृपलानी के साथ मिलकर 1963 में उपचुनाव में मिलकर चुनाव भी लड़ा जिसमें जे बी कृपलानी और डॉक्टर राम मनोहर लोहिया तो चुनाव जीत गए किंतु पंडित दीनदयाल उपाध्याय जौनपुर से जातीय समीकरणों के खेल के कारण चुनाव नहीं जीत पाए किंतु उसके पश्चात भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय संगठनात्मक तौर पर भारतीय राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहे।

शोधविधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें द्वितीयक स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित कर उनकी व्याख्या की गई है और इसमें दीनदयाल उपाध्याय के ,मौलिक विचारों पर आधारित उनकी पुस्तकों के साथ साथ उनके विचारों से संबंधित विभिन्न पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया हैI

शोध उद्देश्य:

1. विपक्ष के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका का अध्ययन।
2. विपक्ष की सकारात्मक भूमिका पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का अध्ययन।

विपक्ष के रूप में पंडित दीनदयाल की भूमिका

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार कांग्रेस सदैव विभिन्न वैचारिक धाराओं एवं अनेक प्रतिभासंपन्न जननेताओं का संगम रही है। जब कांग्रेस राष्ट्रीय आंदोलन के शिखर पर थी तब महात्मा गांधी ने कांग्रेस की भीतरी विचारधारा व व्यक्तित्वमूलक समीकरणों को सँभाला लेकिन महात्माजी की मृत्यु के बाद यह संभव नहीं रहा। उनकी मृत्यु के तुरंत बाद फरवरी 1948 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी ने अपने आपको भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग कर लिया। पं. नेहरू व पटेल के मतभेद इतने तीव्र हो गए कि दोनों का एक साथ पार्टी में रहना असंभव सा लगने लगा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर दोनों के मौलिक मतभेद सार्वजनिक रूप से उजागर हो गए थे। पं. नेहरू संघ के प्रखर विरोधी थे, "स्पष्ट रूप से मेरी सरकार आर. एस. एस. पर बहुत विश्वास नहीं रखती। हम उन पर बहुत सख्त निगरानी रखे हुए हैं।'' जबकि

सरदार पटेल का मत था, "कांग्रेस के जो लोग सत्ता में हैं वे सोचते हैं कि अपनी सत्ता के बल पर आर.एस.एस. को समाप्त करने में समर्थ हो जाएँगे। डंडे से आप किसी संगठन को नहीं दबा सकते। आखिर डंडा चोरों के लिए है इसका उपयोग अधिक सार्थक नहीं होगा। अंततः आर. एस. एस. के लोग कोई चोर और डाकू तो हैं नहीं। वे अपने देश को प्यार करते हैं। केवल उनकी विचारपद्धति भिन्न है। कांग्रेसजन स्नेह से उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।" संघ पर से प्रतिबंध हटवाने में सरदार पटेल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने प्रतिबंध के दौरान पत्र-व्यवहार में गोलवलकर को कांग्रेस के साथ मिलकर काम करने का आग्रह किया तथा प्रतिबंध हटने के बाद नागपुर जाते हुए व्यंकटराम शास्त्री, जो प्रतिबंध हटने के समय सरकार तथा संघ के बीच मध्यस्थ थे, को 17 जुलाई, 1949 को एक पत्र लिखा: "मुझे खुशी है कि आप श्री गोलवलकर से मिलने जा रहे हैं। उन्हें उचित सलाह दें। मैं समझता हूँ उन्हें इसकी जरूरत है। आप उन स्थितियों को जानते हैं जो स्वयं आपके प्रदेश में हो रही है। आपको यह भी ध्यान है ही कि यह सुनिश्चित है कि कांग्रेस का एकमात्र विकल्प अराजकता है। कोई राजनीतिक संस्था उस संगठन को बलवान बनाने के लिए नहीं है।[1]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सरकार की उस वक्त भी कड़ी निंदा की जब खाद्य समस्या हेतु सरकार के पास कोई कारगर नीति नहीं थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने उस वक्त भी कड़े शब्दों में कहा था कि सरकार के पास खाद्य समस्या से निपटने के लिए एक सशक्त नीति होनी चाहिए, ताकि हम खाद्य समस्या से छुटकारा पा सकें व हमारे खाद्य भंडार भर सकें। इसके साथ-साथ पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने खाद्य भंडार बढ़ाने के लिए छह सूत्रीय कार्यक्रम भी तैयार किया।[2]

खाद्यान्न की समस्या से लेकर राष्ट्र की सुरक्षा तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय हर बार मुखर रहे उन्होंने चीन के प्रति भी सरकार को अपना दृष्टिकोण साफ करने के लिए कहा तथा चीन के ऊपर कड़े से कड़े कदम उठाने की सिफ़ारिश की थी। चीन के प्रति कड़ा रुख अपनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कूटनीतिक फैसले लेने के लिए आग्रह किया पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कूटनीतिक तौर पर चीन द्वारा कबजाई गई जमीन को छुड़ाने हेतु कठोर कदम उठाने के लिए कहा पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मीडिया के माध्यम से इस बात का समर्थन किया कि जब तक चीन से जमीर वापस नहीं ली जाती तब तक उनसे सारे कूटनीतिक संबंध तोड़ दिए जाएं।[3] पाकिस्तान के प्रति भी अपना दृष्टिकोण साफ करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि भारत को पाकिस्तान के खिलाफ तुष्टिकरण की नीति नहीं अपनानी चाहिए अपितु जैसे को तैसा जवाब देना चाहिए। अगर भारत पाकिस्तान के खिलाफ तुष्टिकरण की नीति अपनाता है तो यह भविष्य में भारत के हितों के लिए घातक सिद्ध होगा पंडित दीनदयाल जी के अनुसार भारत का द्विराष्ट्र के सिद्धांत को अपनाना भी एक बहुत बड़ी भूल थी जिसे सुधारा जाना अति आवश्यक है। इसलिए भारत का दृष्टिकोण पाकिस्तान के प्रति तुष्टीकरण का नहीं अपितु पाकिस्तान को भारत के अंदर समन्वय करने का होना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोवा मुक्ति आंदोलन व बेरुबारी हस्तांतरण के खिलाफ सरकार

के खिलाफ काफी आक्रोशित रहे तथा समय-समय पर सरकार का विरोध उनकी इन गलत नीतियों के लिए करते रहे।[4]

विपक्ष की सकारात्मक भूमिका में पंडित दीनदयाल उपाध्याय

पंडित दीनदयाल शुरू से ही सरकार की गलत नीतियों के धुर विरोधी रहे चाहे वो भारत-पाक बंटवारा हो या फिर कोई अन्य नीति रही हो। उपाध्याय ने सरकार की हर गलत नीति का पुरजोर तरीके से विरोध किया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार भारतीय राजनीति में जातीयता के प्रयोग में वैसे तो कांग्रेस का सबसे बड़ा हाथ है लेकिन अन्य राजनीतिक दल भी इस तरह की राजनीति से अछूते नही हैं । इस सब के पीछे की मूल वजह उपाध्याय के अनुसार राजनीतिक दलों में कठोर सिद्धांतों का अभाव माना । उपाध्याय जी के अनुसार जातीयता की गाली देने से कोई लाभ नहीं। जो लोग उसे गाली देते हैं, वे अप्रत्यक्ष रूप से उसे बल देते हैं। भारत में हर व्यक्ति किसी-न-किसी जाति का अंग है। यदि किसी को चुनाव लड़ने के लिए सबसे पहले जातीय समीकरणों को देख के चुनाव लड़ना पड़े तो इससे अधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था व राजनीतिक मूल्यों के लिए और कोई चिंता का विषय नही हो सकता। राजनीति के प्रति इस तरह के उनके विचारों से पता चलता है कि उनका राजनीतिक शुचिता पर कितना अडिग विश्वास था।[5]

निष्कर्ष :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अपने राजनीतिक जीवन में जन संघ के नेता व एक विपक्षी नेता के तौर पर भी अपनी एक अलग अमिट छाप छोड़ी पंडित दीनदयाल उपाध्याय उस समय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे जिस समय संपूर्ण भारत में कांग्रेस का एकछत्र राज था एसएस में विपक्ष के तौर पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के पास चुनौती बहुत बड़ी थी किंतु उन्होंने निडरता वह अपनी कुशल कार्यशैली के आधार पर सत्तारूढ़ कांग्रेस की गलत नीतियों का पुरजोर विरोध किया तथा आम जनमानस के लिए हर समय आवाज उठाते रहे विभिन्न विभिन्न आंदोलनों के द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आम जनता के हक के लिए आवाज बुलंद की तथा सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखी जो साफ इस बात को दर्शाता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय केवल सत्ता के विरोधी नहीं अपितु सरकार की गलत नीतियों के आलोचक थे। राष्ट्र की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते थे। जिससे पता चलता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सकारात्मक विपक्ष की भूमिका का निर्वहन भी अच्छे ढंग से करते थे केवल मात्र विरोध करने के उद्देशय से ही विरोध नहीं किया करते थे।

संदर्भसूची

1 महेशचंद्र शर्माए रूभपंडित दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्लीए 2018, पृ. **64.**

2 रवींद्र अग्रवाल, : "पं. दीनदयालजी के प्रेरक विचार," विद्या विहार, दिल्ली, 2018 पृ. 18.

3 महेशचंद्र शर्मा, :"दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वाङ्मय खंड सात," प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 271.

4 महेशचंद्र शर्माए रूभपंडित दीनदयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचारए" प्रभात प्रकाशनए दिल्ली, 2018, पृ. 133.

5 दीनदयाल उपाध्याय, : "पोलिटिकल डायरी," सरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 173.